

Name of the plant	Estimated Expenditure (Rs in lakhs)	Capacity
1 Heavy Water Plant (Kota)	5592.00	100 tonnes/year
2 Heavy Water Plant (Baroda)	3417.00	67.2 tonnes/year
3 Heavy Water Plant (Tuticorin)	3741.00	71.3 tonnes/year.
4 Heavy Water Plant (Talcher)	5075.00	62.7 tonnes/year

(c) The scheduled dates for completion of these Heavy Water Plants could not be adhered to due to various reasons. The technology of production of heavy water is new and complex and processes adopted for these plants are being used for the first time in India. This factor and the delay in the supply of equipment from indigenous and foreign sources, problems in transportation of certain heavy equipments, failure of some of these equipments, interruptions in the supply of power and synthesis gas and events like strikes are the main reasons for the delay in commissioning of the Heavy Water Plants. The production of heavy water at Baroda plant had started on July 4, 1977 but due to an accident that occurred on December 3, 1977 the plant had to be shut-down. The plant is now expected to be back on production in December, 1979. The production of heavy water was started at Tuticorin plant on July 17, 1978.

राष्ट्रीय कपड़ा निगम द्वारा कंट्रोल के कपड़े का उत्पादन न किया जाना

430. श्री बी० जी० हांडे : क्या उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि राष्ट्रीय कपड़ा निगम ने कंट्रोल का कपड़ा बनाने वाली मिलों की अनिवायता समाप्त कर दी है ;

(ख) जब ऐसे कपड़े का उत्पादन किस प्रकार किया जायेगा ;

(ग) क्या जन-साधारण को कुछ राहत देने के लिये कंट्रोल का कपड़ा बनाने की कोई नई योजना है ; और

(घ) यदि हाँ, तो उसका पूर्ण विवरण क्या है ?

उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती आशा माईति) (क) से (घ). 1 प्रकटवर. 1978 से प्रभावी नई वस्त्र नीति के अनुसार मिल क्षेत्र द्वारा नियंत्रित कपड़े का उत्पादन लक्ष्य 4000 लाख कर्ब मीटर प्रति वर्ष निर्धारित किया गया है। नियंत्रित कपड़े का उत्पादन दोनों ही क्षेत्र की मिलों अर्थात् राष्ट्रीय वस्त्र निगम की मिलों और निजी क्षेत्र की मिलों द्वारा किया जाएगा। नियंत्रित कपड़े का उत्पादन करने में राष्ट्रीय वस्त्र निगम की मिलों की भूमिका व्यापक बना दी गई है। राष्ट्रीय वस्त्र निगम द्वारा उत्पादित की जाने वाली नियंत्रित कपड़े की मात्रा निर्धारित कर दिए जाने के बाद जो उत्पादित की जाने वाली कुल मात्रा का करीब आधा होगा। शेष भाग का उत्पादन करने के लिए प्रतिस्पर्धात्मक बोलियों के आधार पर तथा इस शर्त पर कि कपड़ों का मूल्य राष्ट्रीय वस्त्र निगम की मिलों द्वारा उत्पादित उसी प्रकार के कपड़ों के मूल्य से अधिक नहीं होगा, निजी क्षेत्र की मिलों को ठेका दिया जायेगा। इसके अलावा निजी क्षेत्र को मिला द्वारा उत्पादन में हुई किसी प्रकार की कमी को पूरा करने की जिम्मेदारी भी राष्ट्रीय वस्त्र निगम को सौंपी गई है इस प्रकार राष्ट्रीय वस्त्र निगम द्वारा किए जाने वाले कुल उत्पादन की मात्रा समय-समय पर निजी क्षेत्र की मिलों द्वारा किए जाने वाले उत्पादन पर निर्भर करेगी।

#### Bus Sheds in the Capital

431. SHRJI DALPAT SINGH PARASTE: Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

(a) how many bus stops in the Capital still do not have the sheds for the passengers to wait;

(b) the main reasons for not providing sheds at bus stands; and